विश्व न्याय मन्दिर
बहाई विश्व केन्द्र
रिज़वान 2001

विश्व के बहाइयों को

परमप्रिय मित्रगण,

अपने दिलों में उल्लास और आशायें संजोये इस रिज़वान हम एक ऐसे परिवर्तित कालखंड में हैं जब हमारे बीच एक नई मनःस्थिति साफ़ नज़र आ रही है। हमारे विश्वव्यापी समुदाय में प्रक्रिया के महत्व, सुनियोजन की आवश्यकता और योजनाबद्ध ढंग से क्रियाकलापों के संचालन के प्रति हर ओर बहुत गहन जागरूकता दिख रही है ताकि विकास के क्रम को जारी रखा जा सके और प्रभुधर्म के प्रसार और सुगठन के कार्य को सतत् रूप से चलाते रहने के लिए मानव संसाधन विकसित होता रहे। विकास के लिए अपेक्षित इन सभी तत्वों का समन्वित ज्ञान होना कितना जरूरी है यह कहने की बात नहीं है। और यह भी स्पष्ट है कि सुव्यवस्थित प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें अनवरत बनाए रहने की आवश्यकता के महत्व को कम करके नहीं ऑका जा सकता। अतः, चेतना के इस नए स्तर तक हमारे समुदाय का पहुंचना हमारे लिए बहुत ही महत्व की बात है। इस उल्लसित बेला में अपने विश्वव्यापी अभियान के समारंभ के साथ इस महत्व को पहचानने और हमें उसके प्रति आहलाद जता सकने के योग्य बनाने के लिए हम आशीर्वादित सौन्दर्य के परम आभारी हैं।

इस चेतना से उत्पन्न इच्छा-शक्ति की झलक विगत जनवरी में पवित्र भूमि में सम्पन्न महाद्वीपीय सलाहकारों और उनके सहायक मंडल सदस्यों के कॉन्फ्रेंस में मिली। इस घटना ने ऐसे आशाजनक अनुभव को जन्म दिया जिसने प्रभुधर्म के रचनात्मक युग के इस पॉचवें चरण में प्रवेश को सुनिश्चित किया। इस ऐतिहासिक सम्मेलन में जिस नई ताज़ी शक्ति की झलक मिली उसकी पहचान पूरे बहाई समुदाय मे क्रियाकलापों में बढ़ती हुई गुणवत्ता के रूप में की गई। पिछले साल समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकारे जाने के लिए अत्यावश्यक कार्यकलापों में तेजी लाने के जो प्रयास किए गए उनसे यह बात और भी पुष्ट हो गई। इस प्रकार उस पांच वर्षीय योजना का मार्ग प्रशस्त किया गया जो पांचवें कालखंड में प्रवेश करने पर प्रारंभ होनेवाला पहला अभियान है।

विगत चार वर्षीय योजना की अवधि में 300 से भी अधिक प्रशिक्षण संस्थान अस्तित्व में आए। इस अवधि में किए गए प्रमुख प्रयासों को और भी बल प्रदान करके बारह महीने की योजना का उद्देश्य पूरा किया गया। बहाई सामुदायिक जीवन में किशोरों को शामिल करने तथा बच्चों को आध्यात्मिक पोषण प्रदान करने जैसे कार्यों पर ज्यादा ध्यान देने के लिए किए गए आह्वान के उत्तर में बहाई संस्थाओं और अनुयायियों द्वारा दिखलाई गई उल्लेखनीय तत्परता से बारह महीने की योजना का महत्व और भी बढ़ गया। अनेक देशों में बाल-कक्षाओं के शिक्षकों के प्रशिक्षण और संस्थान-प्रक्रिया में किशोरों को शामिल किए जाने जैसे क्रियाकलाप बहाई गतिविधियों के नियमित अंग बन गए हैं। बारह महीने की योजना हालॉकि कम समय की थी परन्तु इसका महत्व बहुत बड़ा था। यह योजना बहाई इतिहास के घटनाओं से भरे कालखंड तथा संभावनाओं से भरे एक और नए कालखंड के बीच एक सशक्त कड़ी थी। योजना की उपलब्धियों ने इस नए कालखंड के लिए समुदाय को अच्छी तरह तैयार किया है। साथ ही बीसवीं सदी के अंत में प्रभुधर्म के क्रियाकलापों के चिरस्थायी प्रभावों के कारण यह योजना हमारे इतिहास में भी अंकित हो गई है। उस प्रत्येक बहाई के लिए जो मानवजाति के सामाजिक-आध्यात्मिक विकास की इस निर्णायक घड़ी में पूरी पृथ्वी के जीवन में और यहॉ तक कि प्रभुधर्म की प्रक्रियाओं को भी प्रभावित करने वाली शक्तियों को समझने की इच्छा रखता हो, इस शताब्दी पर विचार करना उसके लिये सर्वथा योग्य है। हमारे आग्रह और हमारी देख-रेख में तैयार की गई समीक्षात्मक पुस्तक ‘‘प्रकाश की शताब्दी’’ ऐसा ही एक सुंदर प्रयास है।

इस एक वर्ष के दौरान किए गए प्रयासों के क्रम में कई बार प्रभुधर्म के बहिरंग क्रियाकलापों ने अपनी खास झलक दिखलाई। उदाहरण के लिए, मई, अगस्त और सितम्बर महीनों में संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव के आग्रह पर जो सहस्राब्दिक सम्मेलन आयोजित किये गये और जिनमें बहाई प्रतिनिधियों ने प्रमुखता से हिस्सा लिया, उनपर विचार करें। लघु शांति की प्रक्रिया में बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की ऐसी स्पष्ट और गहन भागीदारी के अभिप्राय को समुचित रूप से समझने में अभी काफी समय लगेगा। ऐसी ही एक प्रमुख घटना थी बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के तत्वावधान में इंस्टीच्यूट फॉर स्टडीज इन ग्लोबल प्रॉस्पेरिटी द्वारा भारत में आयोजित महाद्वीपीय परिसंवाद। ‘‘विज्ञान, धर्म और विकास’’ के मुख्य विषय पर केन्द्रित इस कॉन्फ्रेंस में भारत के अग्रणी गैर-सरकारी संगठनों और यूनेस्को, यूनीसेफ, विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा विश्व बैंक जैसी प्रसिद्ध संस्थाओं ने भाग लिया। पूरे बहाई विश्व में घटित हो रहे घटनाक्रम और विकास से बहाई और गैर-बहाई दोनों ही वर्ग के श्रोताओं को परिचित कराने के उद्देश्य से बहाई विश्व समाचार सेवा का इन्टरनेट पर प्रसारण प्रारंभ हुआ।

पिछले साल बहाई विश्व केन्द्र के गहन क्रियाकलापों के बारे में मित्रों को ज्यादातर उन पिछली रिपोर्टों से जानकारी हासिल हुई जिनमें कार्मेल पर्वत पर अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के स्थायी

आसन के अधिग्रहण, जनवरी महीने में पवित्र भूमि में सम्पन्न महाद्वीपीय सलाहकारों और उनके सहायक मंडल सदस्यों के कॉन्फ्रेंस और कार्मेल पर्वत प्रायोजन को पूरा किए जाने जैसी उपलब्धियों की चर्चा की गई थी। मई में आयोजित होने जा रहे उत्सवमय कार्यक्रमों की तैयारी को अब अंतिम रूप दिया जा रहा है। पहली बार अक्टूबर में हाइफा में नवनिर्मित "स्वागत केन्द्र" में तीर्थयात्रियों और आगंतुकों का स्वागत किया गया और अब यह केन्द्र सुचारु रूप से कार्य कर रहा है। बहजी में मनोरम उद्यानों के माध्यम से पावन परिक्षेत्र की साज-सज्जा का कार्य लगातार जारी है। पिछले साल एक और प्रायोजन प्रारंभ किए जाने से इस काम को और भी बल मिला है जिसके अंतर्गत कॉलिन्स द्वार के उत्तरी छोर के परे एक अतिथि-गृह बनाया जा रहा है। अगले कुछ ही महीनों में समाप्त होने जा रहा यह प्रायोजन अब मूर्त रूप ले चुका है और अंतिम साज-सज्जा प्रगति पर है। इन नई सुविधाओं से बहाई विश्व केन्द्र बढ़ती हुई संख्या में तीर्थयात्रियों, अल्पकालिक बहाई प्रवासियों और विशिष्ट आगन्तुकों का स्वागत करने में सक्षम हो सकेगा।

पिछले साल की उपलब्धियों को संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए हमें आपको यह सूचना देकर अपार आनन्द की अनुभूति हो रही है कि लगभग तीन दशकों के अंतराल के बाद पिछले रिज़वान को जकार्ता में सम्पन्न हुए राष्ट्रीय अधिवेशन में इंडोनेशिया के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा का पुनर्गठन हो गया। इंडोनेशिया के बहाई बन्धुओं को उनके क्रियाकलापों से वंचित करते हुए अगस्त 1962 में सख़्त प्रतिबंध लगा दिया गया था। इस लम्बे दौर में उन्होंने विवेक और दृढ़ता से काम लिया। अन्ततः उस देश की परिस्थितियां बदल गईं और प्रतिबंध हटा लिया गया। अतः, क्या हमें यह आशा करने का साहस नहीं करना चाहिए कि अन्ततः ईरान, मिस्र और अन्य देशों में भी हमारे संकटग्रस्त धर्मबंधुओं के बारे में ऐसे ही सुखद समाचार निकट भविष्य में प्राप्त होंगे?

प्रिय मित्रों! आज से दो दशक बाद बहाई विश्व में रचनात्मक युग के समारंभ की शताब्दी का समारोह मनाया जाएगा। इस युग के अरुणोदय पर दृष्टिपात करते हुए हमारा ध्यान अपनी उन उपलब्धियों पर जाता है जिनके बारे में रचनात्मक युग के प्रारंभ में सोचा भी नहीं जा सकता था। हमारे सामने हैं वे क्षितिज जो हमारे समुदाय को और भी महान उपलब्धियों की ओर बुला रहे हैं। हम उन ऊँचाईयों को छू सकते हैं और हमें छूना ही है। पांच वर्षीय योजना, जिसके बारे में हम पूरे विश्व के बहाइयों का ध्यान दिलाना चाहते हैं, इसी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार की गई है। इस योजना में निहित है कुछ ऐसे प्रथम अभियानों की एक कड़ी जिनपर इन बीस सालों में ध्यान केन्द्रित किया जाएगा। समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकारे जाने की प्रक्रिया में उल्लेखनीय विकास प्राप्त करने के उद्देश्य से यह हमारे प्रयासों के अगले चरण को रेखांकित करने वाली योजना है। यह योजना इस अनिवार्य प्रक्रिया में तेजी लाए जाने की मांग करती है और इसके

अलावे यह अपने तीन घटक भागीदारों -- व्यक्ति, संस्था और समुदाय -- द्वारा लगातार सुनियोजित प्रयास किए जाने का आग्रह करती है।

योजना की आवश्यकताओं पर यहां विस्तृत चर्चा करने की जरूरत नहीं है क्योंकि उनके बारे में पवित्र भूमि में एकत्रित सलाहकारों को संबोधित हमारे संदेश में प्रकाश डाला जा चुका है और बाद में राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को भी उनके बारे में अवगत कराया जा चुका है। इस कान्फ्रेंस के तुरन्त बाद अपने-अपने क्षेत्रों में इन सलाहकारों ने राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं के साथ योजना के कार्यान्वयन के सम्बन्ध में परामर्श की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी थी। अतः इस योजना के दिशानिर्देशों के बारे में हर जगह के मित्रों को मालूम है, क्योंकि इसके प्रमुख उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर तैयारियां प्रारंभ की जा चुकी हैं। अबतक यह सामान्य चेतना बन चुकी है कि हर देश में ज्यादा से ज्यादा क्षेत्रों में प्रभुधर्म की और भी गहरी पैठ बनाने के लिए प्रयास किए जाएंगे। उदाहरण के लिए, जहाॅ परिस्थितियां अनुकूल हैं वहां परस्पर सघन रूप से बसे हुए स्थानीय समुदाय के विकास हेतु गहन कार्यक्रमों में भागीदार बनने के लिए प्रेरित किए जाएंगे। कुछ और भी तरीके प्रयोग में लाने के लिए जरूरी होगा सही पद्धति से नए क्षेत्रों को प्रभुधर्म के लिए खोला जाना जहां होमफ्रंट पायनीयरों को उसी पवित्र भावना के साथ बसने के लिए प्रेरित किया जाएगा जिस भावना से प्रारंभिक काल के पायनीयर प्रभुधर्म के लिए अनछुए क्षेत्रों के द्वार खोलने के उद्देश्य से दूर-दूर तक फैल गए थे। इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इस दिव्य-प्रेरणा-सम्पन्न योजना से जुड़ी हुई विशिष्टताओं का जैसे-जैसे क्रमिक परिचय प्राप्त होगा और जैसे-जैसे सुनियोजित ढंग से योजना के संचालन में उन्हें पिरोया जाएगा, वैसे-वैसे इस योजना का विस्तार होता चला जाएगा।

रचनात्मक काल के पांचवें चरण की एक विशेषता होगी कि जहां कहीं भी राष्ट्रीय समुदायों में परिस्थितियां अनुकूल हों वहां राष्ट्रीय बहाई उपासना मन्दिरों के निर्माण के माध्यम से समुदाय के भक्तिपरक जीवन को समृद्ध बनाया जायेगा। इन प्रायोजनों के बारे में किसी देश में समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकारे जाने की प्रक्रिया में हुई प्रगति को ध्यान में रखते हुए विश्व न्याय मन्दिर कार्यक्रम तय करेगा। यह विकास अब्दुल-बहा की दिव्य योजना के आने वाले सभी चरणों में स्पष्ट होता जायेगा। पश्चिम में सबसे पहले निर्मित उपासना मन्दिर का निर्माण पूरा होने पर धर्मसंरक्षक ने महाद्वीपीय मन्दिरों के निर्माण का कार्यक्रम प्रारंभ किया। दस वर्षीय योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने के क्रम में शुरू में ऐसे मशरिकुल-अज़कार कम्पाला, सिडनी और फ्रैंकफर्ट में निर्मित किए गए। विश्व न्याय मन्दिर द्वारा इसी कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए पनामा सिटी, एपिया और नई दिल्ली में मन्दिरों का निर्माण किया गया। परन्तु यह महाद्वीपीय चरण अभी पूरा किया जाना हैः एक और मंदिर का निर्माण होना बाकी है। हार्दिक कृतज्ञता और आह्लाद की भावना के साथ इस मांगलिक बेला में हम यह घोषणा करना चाहते हैं कि हमने इस अंतिम

प्रायोजन को प्रारंभ करने का निर्णय ले लिया है। पांच वर्षीय योजना के दौरान सांतियागो /चिली/ में दक्षिणी अमेरिका के प्रथम मन्दिर के निर्माण का काम प्रारंभ हो जाएगा और इस प्रकार शोगी एफेन्दी ने साफ़ तौर पर अपनी जो इच्छा प्रकट की थी वह पूरी हो जाएगी।

साथ ही, वह समय आ गया है जबकि विश्व केन्द्र में आर्क के नए भवनों में स्थित संस्थाओं के कार्यकलापों का विकास किया जाए। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र ने अपने कार्यों का उल्लेखनीय विकास कर लिया है, अतः खास तौर पर पवित्र पाठों के अध्ययन के केन्द्र के कार्यों को सुगठित करने पर ध्यान दिया जाएगा। इसके तहत पवित्र लेखों के अंग्रेजी अनुवाद को समृद्ध करने का लक्ष्य प्रमुख होगा। इस संस्था का उद्देश्य है पवित्र लेखों से पुष्टि प्राप्त करने में विश्व न्याय मन्दिर की सहायता करना तथा प्रभुधर्म के प्रामाणिक पाठों का अनुवाद और उनपर टिप्पणियां तैयार करना। इसके साथ ही, पवित्र भूमि में उन उपायों को खोजने की दिशा में भी सतत् प्रयास जारी रखे जाएंगे जिनसे बहाई विश्व केन्द्र में आनेवाले तीर्थयात्रियों और आगन्तुकों की संख्या में और भी बढ़ोत्तरी संभव हो सके।

पांच साल पहले अपने रिज़वान सन्देश में हमने कार्मेल पर्वत प्रायोजन की पूर्णाहुति और बाब की समाधि के सोपानों को जनसमुदाय के लिए खोले जाने के उपलक्ष्य में बहाई विश्व केन्द्र में एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए जाने की घोषणा की थी। अब वह क्षण आ पहुंचा है और 21 से 25 मई तक, पांच दिनों तक चलनेवाले कार्यक्रमों में वस्तुतः दुनिया के सभी देशों से भाग लेने के लिए पहुंचने वाले मित्रों का स्वागत करने की कल्पना से हम आहलादित हैं। हम यह कहते हुए भी ख़ुशी महसूस कर रहे हैं कि वर्ल्डवाइड वेब और उपग्रह के जरिए सीधे प्रसारण के माध्यम से समस्त बहाई विश्व को इन कार्यक्रमों से जोड़ने के उपाय किए जा रहे हैं और इस बारे में सूचना दी जा रही है। एक ओर बहाई विश्व केन्द्र का ध्यान इन तैयारियों पर जहां केन्द्रित हो रहा है, वहीं दूसरी ओर हाइफा के जनसमुदाय में भी एक नए उत्साह का संचार हो रहा है जहां नगर निगम अधिकारी ''कार्मेल पर्वत पर बहाई समाधि और उद्यान : एक दृश्य-यात्रा'' नामक पुस्तक इसी समय प्रकाशित करने के लिए उद्यत हैं। साथ ही इज़रायल का डाक प्राधिकरण इसी समय इन सोपानों पर डाक टिकट जारी करने के अपने निर्णय को कार्यरूप देने में लगा है। इस अवसर का महत्व मुख्य रूप से इस बात में है कि यह हमें बीसवीं सदी के दौरान प्रभुधर्म द्वारा तय की गई एक लम्बी दूरी पर विचार करने का अवसर प्रदान करेगा। साथ ही, यह वह समय भी होगा जब हम ईश्वर के पवित्र पर्वत पर स्थापित महत्वपूर्ण संस्थाओं के निर्माण से संकेतित विशिष्ट उपलब्धियों के भावी अभिप्राय के बारे में विचार कर सकेंगे -- उन संस्थापनाओं के बारे में जिनसे हमारे धर्म के आध्यात्मिक और प्रशासनिक केन्द्रों की झलक पूरे विश्व को मिली है।

हमारा समुदाय इन उत्साहवर्द्धक विचारों से जहां रोमांचित है, वहीं इसके प्रत्येक सदस्य को यह याद रखना चाहिए कि विजय-चिह्नों पर ठहर जाने का समय नहीं है। मानवजाति की वर्तमान दशा इतनी निराशाजनक है कि इस युग में स्वर्ग से भेजी गई 'जीवन की रोटी' जो हमें प्राप्त हुई है उसे दूसरों के साथ बांटने में हम एक क्षण भी नहीं हिचक सकते। अतः उस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में हमें देर नहीं करनी चाहिए जिसमें सत्य के लिए भूखी आत्माओं को आतिथेयों के प्रभु के दावत की मेज पर पहुंचाने की सफलता का वचन निहित है।

जो अपनी दिव्य प्रणाली की निगरानी करने वाला प्रभु है वह आपके सामने पड़े परमावश्यक कर्तव्यों को पूरा करने में आपके द्वारा किए जा रहे प्रयासों में आपका मार्गदर्शन करे और उन्हें पुष्टि प्रदान करे, हमारी यही आकांक्षा है।

विश्व न्याय मन्दिर